वर्ष : 10 अंक : 3 जुलाई–सितम्बर 2015

पन्त प्रसार सन्देश

(प्रसार शिक्षा निदेशालय की त्रैमासिक समाचार पत्रिका)
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर–263 145, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

संरक्षकः डा. मंगला राय, कुलपति
मुख्य सम्पादकः डा. वाई. पी. एस. डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा
सम्पादकः डा. जितेन्द्र सिंह, पोस्ट डाक्टरल फेलो एवं ई. अनिल कुमार, सह निदेशक (कृषि अभियन्त्रण)

कुलपति संदेश

हमारे किसानों का अगर उन्नयन एवं विकास नहीं हुआ, खेती–बाड़ी, पशुपालन, मत्स्य पालन, वानिकी आदि अगर लाभकारी नहीं हुई तो हमें सुख शान्ति कैसे मिलेगी ? यह सभी सम्भव होगा उच्च कोटि के तकनीकी विकास से, प्रक्षेत्र प्रदर्शनों से, ज्ञान एवं विज्ञान को कृषकों तक ले जाने से और कृषकों के उत्पाद को बाजार तक पहुंचाने से। प्रसंस्करण, मूल्यवर्धन, भण्डारण एवं विपणन की विभिन्न विधाओं पर हमें गहन विचार–विमर्श करना होगा। लाभकारी खेती में आने वाले अवरोधों को दूर करना होगा। इस कड़ी में विभिन्न क्षेत्र में पुरजोर प्रयास शुरू किये जा चुके हैं। सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों के सुदृढ़ीकरण का काम विगत कुछ माह से पुरजोर गति से आगे बढ़ रहा है। अनेकानेक चीजें सतह पर उभरती नजर आ रही हैं। प्रसार शिक्षा में गतिशीलता लाने के लिए प्रसार सलाहकार समिति के माध्यम से तथा समस्त कृषि विज्ञान केन्द्रों के कार्यकलापों की समीक्षा से राज्य के किसानों के चहुँमुखी विकास की ओर कदम बढ़ाये गये हैं। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आने वाले समय में हम अपने किसान भाइयों और बहनों की बेहतर सेवा कर सकेंगे।

वैज्ञानिकों द्वारा किए गए शोध निष्कर्षों को जन–जन तक पहुंचाने में प्रसार शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों जैसे प्रशिक्षणों, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों इत्यादि द्वारा प्रदेश के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में कृषक, कृषक महिलाएं एवं युवक तकनीकी अर्जित कर आजीविका एवं स्वरोजगार के क्षेत्र में आशातीत वृद्धि करने में सफल होंगे। इस पत्रिका द्वारा पन्तनगर विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा की गतिविधियों को आप तक पहुंचा कर हमें प्रसन्नता हो रही है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका प्रसार कार्यों को और अधिक गतिशील बनाने में सहभागी होगी।

शुभकामनाएँ।

(मंगला राय)
कुलपति

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून)

आम में घुण्डी कीट के प्रकोप से किसानों को उत्पादन में बहुत अधिक क्षति होती है। एक अनुमान के अनुसार देहरादून जनपद में लगभग 3500 है. आम के उद्यान इस कीट से गम्भीर रूप से प्रभावित हैं, जिनमें आम के उत्पादन में लगभग 50–60 प्रतिशत का नुकसान होता हैं। इस विनाशकारी कीट के नियन्त्रण हेतु किसानों को जागरूक कर अगस्त–सितम्बर, 2014 में लगभग 200 है. क्षेत्रफल में केन्द्र द्वारा संस्तुत कीटनाशकों थायोमिथेक्साम 1 ग्रा. प्रति ली. पानी की दर से + प्रोफेनोफास 2 मिली. प्रति ली. पानी की दर से + स्टीकर 1 मिली. प्रति ली. घोल की दर से छिड़काव कराया गया था। जब इसका परिणाम अर्थात आम का उत्पादन जुलाई, 2015 में प्राप्त हुआ तो इस कीट के नियन्त्रण से आम उत्पादन में लगभग 50 प्रतिशत की वृद्धि हुयी। परिणामस्वरूप अगस्त, 2015 में किसानों को लगभग रू. एक करोड़ का शुद्ध आय प्राप्त हुआ। आम उद्यानों में घुण्डी कीट नियन्त्रण के लिये किये गये छिड़कावों से प्राप्त परिणामों से केन्द्र के वैज्ञानिकों एवं किसानों के उत्साह एवं आत्मविश्वास में असाधारण वृद्धि हुयी। जो किसान यह सोचते थे कि इस कीट का कोई इलाज नही है उन किसानों के दृष्टिकोण में पूर्णरूप से परिवर्तन हो चुका है तथा ऐसे किसान क्षेत्र के दूसरे किसानों को अपने अनुभवों से अवगत करा रहे हैं। यह समस्त कार्य सिर्फ और सिर्फ किसानों को जागरूक कर किया गया है, जो अपने आप में एक मिसाल है।

आम में घुण्डी कीट (शूट गॉल सिला) कीट के प्रबन्धन हेतु देहरादून जनपद के

आम में घुण्डी कीट का प्रकोप

सहसपुर, विकासनगर एवं कालसी विकासखण्डों के आम उत्पादक क्षेत्रों के गाँवों में आम में घुण्डी की नियंत्रण अभियान का संचालन अगस्त 03–22, 2015 तक किया गया। इसके अन्तर्गत लगभग 400 किसानों को घुण्डी कीट नियन्त्रण विषय पर जागरूक किया गया। केन्द्र द्वारा संचालित किये गये अभियान के परिणामस्वरूप किसानों द्वारा लगभग 1000 है. क्षेत्रफल में आम उद्यानों में केन्द्र द्वारा संस्तुत उपरोक्त कीटनाशकों का छिड़काव किया गया। केन्द्र द्वारा संचालित किये गये अभियान से किसानों को जागरूक करने, अधिक क्षेत्रफल में कीटनाशकों का छिड़काव कराने तथा किसानों के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने में अपार सफलता मिली है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी में सितम्बर 03, 2015 को वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बारहवीं बैठक निदेशक प्रसार शिक्षा, पन्तगर की अध्यक्षता में आयोजित की गयी। बैठक में रेखीय विभागों के अधिकारियों, नाबार्ड, राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के देहरादून संस्थान के वैज्ञानिक तथा अटारी, कानपुर के प्रधान वैज्ञानिक द्वारा प्रतिभाग किया गया। इस बैठक में वैज्ञानिक सलाहकार समिति के सदस्यों तथा प्रगतिशील कृषकों ने भी प्रतिभाग किया। बैठक में केन्द्र के कार्यक्रम समन्वयक एवं अन्य वैज्ञानिकों द्वारा वर्ष 2014–15 में किये गये प्रसार कार्यों पर आधारित प्रस्तुतिकरण किया गया तथा वर्ष 2015–16 की कार्ययोजना भी प्रस्तुत की गयी। बैठक में प्रतिभाग कर रहे वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों द्वारा दिये गये सुझावों को कार्ययोजना में सम्मिलित कर लिया गया है तथा केन्द्र द्वारा उन सुझावों को प्रसार कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों को लाभान्वित किया जा रहा है।

केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में कुल 36 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिनमें 734 किसान लाभान्वित हुये। प्रशिक्षणों का आयोजन फसल उत्पादन, सब्जी उत्पादन, बागवानी, पोषण प्रबन्धन, पशुपालन, कुक्कुट पालन, चारा उत्पादन, पोषण वाटिका इत्यादि पर किया गया। इसके अतिरिक्त प्रसार कर्मियों के लिए 03 प्रशिक्षण आयोजित किये गये, जिसमें 42 प्रसारकर्मियों को प्रशिक्षित किया गया। केन्द्र पर दूरदर्शन देहरादून द्वारा कृषि एवं इससे सम्बन्धित समसामयिक विषयों पर केन्द्र के विभिन्न वैज्ञानिकों का पांच बार अलग–अलग दिवस में रिकार्डिंग की गयी। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा खरीफ फसलों में किसान प्रक्षेत्रों पर 92 प्रक्षेत्र भ्रमण कर 806 किसानों की समस्याओं का निदान किया गया।

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा 12.9 है. क्षेत्रफल में कुल 153 प्रदर्शनो का आयोजन किया गया। इन प्रदर्शनों का आयोजन धान, कुक्कुट पालन, पशुपालन, टमाटर, पोषण वाटिका इत्यादि पर आयोजित किये गये। टमाटर के प्रदर्शनों में भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बंगलौर द्वारा विकसित अर्का रक्षक हाईब्रिड में बैक्टीरियल विल्ट का प्रकोप नही पाया गया। जबकि टमाटर की अन्य हाईब्रिड विशेषकर हिमसोना में इस बीमारी का प्रकोप लगभग 40–50 प्रतिशत तक पाया गया। अर्का रक्षक के उत्पादन के आंकड़े लिये जा रहे है।

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन का आयोजन

टी.एस.पी. परियोजना के अन्तर्गत लहसुन की एग्रीफाउण्ड पार्वती प्रजाति का 08 कुन्तल बीज एन.एच.आर.डी.एफ., क्षेत्रीय केन्द्र, करनाल से क्रय किया गया, जिसे चकराता विकासखण्ड के सैन्ज तथा हटाल गाँवों में जबकि कालसी विकासखण्ड के उत्पाल्टा गांवों में कुल 40 किसानों को 20–20 किग्रा. बीज प्रदर्शन हेतु दिये गये। किसानों द्वारा बीज की बुवाई कर ली गयी हैं तथा जमाव भी हो चुका है।

केन्द्र के प्रक्षेत्र पर स्थापित लीची उद्यान छत्रक प्रबन्धन (कैनोपी मैनेजमेन्ट) का प्रदर्शन उद्यान विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों की देख–रेख में अगस्त, 2015 में सम्पादित किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, गैंना एंचोली (पिथौरागढ़)

डा. वाई.पी.एस. डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा एवं अन्य ने जुलाई 31, 2015 को केन्द्र पर भ्रमण किया एवं उनके द्वारा केन्द्र के गैना एवं ऐंचोली प्रक्षेत्र पर कई कृषकोपयोगी कार्य करने के निर्देश दिये गये। डा. एच.सी. शर्मा, अधिष्ठाता, प्रौद्योगिकी महाविद्यालय एवं अन्य द्वारा केन्द्र पर अगस्त 04, 2015 को केन्द्र पर भ्रमण किया गया। उनके द्वारा केन्द्र पर जल संरक्षण करने पर जोर दिया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, गैना–पिथौरागढ़ द्वारा ग्राम–बड़ाबे में निदेशक, भा.कृ.अ. प.– अटारी, कानपुर के निर्देशानुसार जुलाई 16, 2015 को एक दिवसीय बागवानी एवं किसान मेले का आयोजन मा. सांसद श्री अजय टम्टा जी के प्रतिनिधि श्री गणेश भण्डारी जी की अध्यक्षता में किया गया। इस मेले में 180 (पुरूष 163 एवं 17 महिला) कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

किसान गोष्ठी का आयोजन

केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में केन्द्र पर 07 तथा केन्द्र से बाहर 10 प्रशिक्षण सम्पन्न किए गए, जिसमें क्रमशः 112 एवं 204 कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा वाह्य प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु 02 प्रशिक्षण आयोजित किये गये, जिसके द्वारा 37 (पुरूष 27 एवं 10 महिला) प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। कृषि विज्ञान केन्द्र, गैना–पिथौरागढ़ की बारहवीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक सितम्बर 17, 2015 को डा. वाई.पी.एस. डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसमें जिले के रेखीय विभागों के अधिकारियों एवं प्रगतिशील कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 18 गोष्ठियों में प्रतिभाग किया गया, जिससे 537 कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत् त्रैमास में कृषकों के प्रक्षेत्र पर 70 भ्रमण किए गये, जिसके द्वारा 486 कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र पर जानकारियाँ प्राप्त करने हेतु 588 किसानों द्वारा 62 भ्रमण किये गये और केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा कृषि संबंधी समस्याओं का समाधान एवं कृषि उत्पादन की नवीनतम जानकारी प्राप्त की गयी। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 02 रेडियों कार्यक्रम दिये गये और प्रचार–प्रसार हेतु दैनिक समाचार पत्र अमर उजाला व दैनिक जागरण में 04 तकनीकी समाचारों को प्रकाशित किया गया।

केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों में तिलहन के अंतर्गत्–3.0 हे. में 86 प्रदर्शन, दलहन–1.5 हे. में 59 प्रदर्शन, अन्य फसलों के अंतर्गत्–8.2 हे. में 257 को लगाया गया।

प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

केन्द्र में सितम्बर 02, 2015 को वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बारहवीं वार्षिक बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक की अध्यक्षता निदेशक प्रसार शिक्षा, गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर डा. वाई.पी.एस. डबास ने की। डा. जे.पी. सिंह, निदेशक अनुसंधान केन्द्र, पन्तनगर बैठक के मुख्य अतिथि रहे। बैठक में अटारी, कानपुर से प्रधान वैज्ञानिक डा. अतर सिंह ने भी भाग लिया। बैठक में जनपद के रेखीय विभागों के अधिकारी, मुख्य कृषि अधिकारी, मुख्य पशुचिकित्साधिकारी, जिला उद्यान अधिकारी, प्रभारी अधिकारी, मत्स्य तथा नाबार्ड के जिला विकास प्रबन्धक भी बैठक में उपस्थित रहे। जनपद के प्रगतिशील कृषको श्री योगेन्द्र सैनी, श्रीमती राखी सैनी, श्री कटार सिंह, श्री कुँवरपाल सैनी तथा श्री विजयपाल सैनी ने भी बैठक में प्रतिभाग किया। बैठक में केन्द्र के प्रभारी अधिकारी, डा. पुरूषोत्तम कुमार ने केन्द्र की गत वर्ष की बैठक का कार्यवृत्त, केन्द्र के क्रियाकलापों की जानकारी एवं आगामी छःमाही में किये जाने वाले कार्यक्रमों की भी जानकारी दी। इस अवसर पर सदस्यों ने केन्द्र के कार्यों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर सुझाव दिये। बैठक में आये सुझावों में दलहन एवं तिलहन, उद्यान, मौनपालन तथा डेयरी उद्योग को प्रोत्साहन देना मुख्य रहा।

केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में कुल 23 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें जनपद के 467 किसानों को कृषि एवं सम्बन्धित विषयों पर तकनीकी रूप से सुदृढ़ किया गया।

केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों पर 182 तथा प्रक्षेत्र परीक्षणों पर 40 प्रक्षेत्रों पर कृषि, उद्यान, पशुपालन एवं गृह विज्ञान विषयक परीक्षणों का आयोजन किया गया।

विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा रेखीय विभाग के प्रसार कार्यकर्त्ताओं हेतु 01 प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 28 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया।

केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास में 03 रेडियो वार्ता रिकार्ड कराई गई।

कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा)

केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में केन्द्र पर, केन्द्र के बाहर एवं ग्रामीण युवाओं हेतु 22 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें 403 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। साथ ही केन्द्र द्वारा 02 प्रक्षेत्र दिवस आयोजित किया गया, जिसमें 52 कृषक लाभान्वित हुए। विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा में सितम्बर 29, 2015 को आयोजित एक दिवसीय किसान मेला एवं प्रदर्शनी में केन्द्र द्वारा स्टॉल लगाकर विकसित तकनीकियों को प्रदर्शित किया गया।

केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास मे 12.00 हे. क्षेत्रफल पर 107 कृषकों के खेत पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों एवं अनुकरणीय प्रदर्शनों का आयोजन किया जा रहा है। केन्द्र के वैज्ञानिक समय–समय पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का भ्रमण कर कृषकों को आवश्यक कार्य करने हेतु जानकारी प्रदान करते हैं एवं कृषकों की समस्याओं का समाधान भी मौके पर कर रहे हैं।

केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास में 83 कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण किया गया, जिसमें 1365 कृषकों को आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराई गयी एवं समस्याओं का निराकरण भी किया गया।

अगस्त 04, 2015 को गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर के निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास एवं सयुक्त निदेशक प्रसार (उद्यान), डा. डी.सी. डिमरी द्वारा केन्द्र पर स्थापित फल पौधों के बगीचे का निरीक्षण किया गया। अगस्त 17, 2015 को निदेशक अनुसंधान केन्द्र, डा. जे.पी. सिंह एवं सयुक्त निदेशक अनुसंधान केन्द्र, डा. रमेश चन्द्रा द्वारा केन्द्र के प्रक्षेत्र का भ्रमण किया गया। अगस्त 16, 2015 को प्राध्यापक, सब्जी विज्ञान, डा. वाई.वी. सिंह एवं डा. एस.पी. उनियाल द्वारा प्रक्षेत्र की प्रगति देखने हेतु भ्रमण किया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल)

केन्द्र द्वारा बाजार में उपलब्ध आम छतरी को किसानोपयोगी बनाने हेतु एक 'किसान छतरी' की तकनीक का विकास किया गया है। इस छतरी को बनाने

किसान छतरी

का उद्देश्य कृषकों को खेत में कार्य करते समय सूर्य की तेज धूप से बचाकर उनकी कार्य क्षमता को बढ़ाता है। 'किसान छतरी' नामक विकसित तकनीक के अन्तर्गत खेत में विभिन प्रकार के कार्यकलाप करने वाले कृषक की पीठ पर छतरी को बैल्टों की मदद से बांध दिया जाता है। पीठ पर बंधी 'किसान छतरी' की मदद से उसे तेज धूप में बैठकर कृषि कार्य जैसे निराई व गुड़ाई करने में आसानी महसूस होती है साथ ही उसके कार्य करने की क्षमता में बढ़ोत्तरी होती है।

विगत त्रैमास में केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न विषयों जैसे– बैकयार्ड कुक्कुट पालन, अदरख के प्रकन्द गलन रोग का समन्वित प्रबन्धन, टमाटर में समन्वित रोग प्रबन्धन, वैज्ञानिक ढंग से पशु प्रबन्धन, सब्जियों में एकीकृत

प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

पोषक तत्व प्रबन्धन, मुलायम खिलौने बनाना, बांधनी कला द्वारा घरेलु वस्त्रों की रंगाई, इस्तेमाल किये गये कपड़ों का प्रयोग कर बैग बनाने में क्षमता विकास, सोलेनियस कुल की सब्जियों की वैज्ञानिक खेती, कद्दू वर्गीय सब्जी में एकीकृत रोग प्रबन्धन, धान में समन्वित कीट/रोग प्रबन्धन, पशुओं के मुख्य रोग व उनका नियंत्रण बरसात के मौसम में पशु प्रबन्धन, रबी तिलहन फसलों में उर्वरक प्रबन्धन आदि विषयों पर केन्द्र व केन्द्र से बाहर कुल 17 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया इन प्रशिक्षणों का आयोजन केन्द्र के साथ–साथ जनपद के पासौली, थारी, कौसानी, लमजाला, जून स्टेट भक्त्यूड़ा, सुनकिया, सिलौटी, हल्दूपोखरा नायक, तल्ला गेठिया आदि ग्रामों में किया गया।

केन्द्र के वैज्ञानिकों ने विगत त्रैमास में मृदा विज्ञान, पशुपालन, गृहविज्ञान, पादप सुरक्षा तथा उद्यान विज्ञान अन्य विषयों जैसे बैकयार्ड कुक्कुट पालन, मोमबत्ती बनाना, सोयाबीन में एकीकृत पोषक प्रबन्धन, धान में एकीकृत पोषक तत्व प्रबन्धन आदि विषयों में कुल 89 प्रदर्शन कार्यक्रमों का कुशल संचालन किया गया प्रदर्शनों का आयोजन लगभग 3.05 हे. क्षेत्रफल में सकुना, दोगड़ा, चोपड़ा, गेठिया, स्यालीखेत, सरियाताल, भटलानी, टिकुरी, धनपुर, सरना, थारी, सिलौटी, गंगापुर आदि स्थानों पर सफलतापूर्वक किया गया।

सफलता की कहानी

1. जंगली जनावरों से फसलों का बचाव :

पर्वतीय क्षेत्रों में जंगली जानवरो से फसल को काफी आर्थिक नुकसान होता है। कृषकों के पास जंगली जानवरों से फसल को बचाने के लिए कोई उपयुक्त विधि नहीं है। कृषक रातभर जागकर डोरी से बंधे एक पत्थर या लकड़ी के टुकड़े से कनस्तर या थाली द्वारा ध्वनि उत्पन्न कर जंगली जानवरो को फसल से दूर रखने का प्रयत्न करते हैं।

पर्वतीय क्षेत्रों में ऐसे कई स्थान हैं जहॉ पर पानी ऊँचाई से गिरता है। इस गुरूत्वाकर्षण उर्जा का प्रयोग एक शाफ्ट जो कि पंखे से लगी है, उसको चलाने में किया जाता है। अगर वृत्ताकार गति करने वाली भुजा के पास एक टीन का टुकड़ा रख दिया जाए तो यह लगातार ध्वनि उत्पन्न करता रहेगा। इस कारण जंगली

ध्वनि उत्पन्न करने हेतु पंखे पर लगी शाफ्ट

सुअर, चिड़ियाँ, जड़ाऊ, कांकड़, खरगोश आदि खेतों से दूर ही रहते हैं। कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट के सहयोग से कौसानी गाँव के एक कृषक श्री जगमोहन आर्य ने एक यंत्र विकसित किया है। इस यंत्र को चलाने के लिए लगभग डेढ़ से दो इंच मोटे पानी को पॉच फीट की ऊचाई से यंत्र के पंखे पर गिराया जाता है जिससे यह ध्वनि उत्पन्न करने लगता है। इस यंत्र को प्रयोग करने से जंगली जानवर उनके खेतों से दूर ही रहते हैं। इस विधि को और अधिक विकसित कर घराट भी चलाया जा सकता है।

2. मोमबत्ती बनाना : एक कला एवं स्वरोजगार

देश व प्रदेश के अन्य भागों की तरह रोजगार आज के युवाओं के लिये एक चुनौती है। यह स्थिति ग्रामीण अंचलों मे ज्यादा विकट है। जहॉ देश की लगभग 65 प्रतिशत आबादी निवास करती है तथा जिसका मुख्य व्यवसाय खेती अथवा उससे जुडे व्यवसाय जैसे पशुपालन, मत्स्य पालन आदि है। उत्तराखण्ड राज्य में भी बेरोजगारी देश के अन्य भागों की तरह एक विकट समस्या है। प्रायः पढ़े–लिखे नौजवान रोजगार की तलाश में भटक रहे हैं तथा मैदानी भागों में पलायन करने के लिये विवश है।

उपरोक्त परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए यह नितान्त आवश्यक है कि जनपद के बेरोजगार ग्रामीण युवाओं एवं ग्रामीण महिलाओं को उनके घर/गाँव में

मोमबत्ती बनाते हुए प्रशिक्षणार्थी

ही स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध करायें जायें ताकि उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत हो सके तथा रोजगार हेतु पलायन ना करना पड़े।

जनपद नैनीताल के किसानों के पास कृषि योग्य भूमि कम है साथ ही चकबन्दी न होने के कारण उपलब्ध खेतों का बिखराव भी अधिक है। जंगली जानवर, मौसम की मार किसानों द्वारा अपनाये जा रहे अवैज्ञानिक तरीके तथा नवीन कृषि तकनीकी जानकारियों का अभाव, समस्या को और भी बढ़ा देते है।

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रदत्त तकनीक : ऐसी परिस्थितियों मे कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों की भूमिका और बढ़ जाती है यद्यपि जनपद के कृषक खेती के उन्नत तरीकों की जानकारी समय–समय पर केन्द्र के माध्यम से प्राप्त करते रहते हैं फिर भी वैज्ञानिक किसानों की मॉग के अनुसार समय–समय पर केन्द्र तथा केन्द्र के बाहर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं। इसी श्रृंखला में लक्ष्मीबाई स्वयं सहायता समूह, ग्राम–तल्ला गेठिया की 20 महिलाओं को मोमबत्ती बनाना विषय पर 3 दिवसीय प्रशिक्षण माह जुलाई 2014 में आयोजित किया गया।

प्रशिक्षणोपरान्त श्रीमती मंजु आर्या, माया कौटल्या, मधु देवी, गीता, रमा शाह, पार्वती कोरंगा आदि द्वारा मोमबत्ती बनाने की कला से प्रेरित होकर एवं आसानी से कम लागत में घर बैठे ही इस कला को स्वरोजगार के रूप में अपनाने का निश्चय किया गया इसके परिणाम स्वरूप कृषि विज्ञान केन्द्र के माध्यम से काम शुरू करने हेतु निवेश के तौर पर सॉचा, धागा व मोम प्रदान किये गये ताकि मोमबत्ती बनाकर शुरूवाती दौर मे वह बिना लागत के लाभ ले सकें।

प्रारंम्भिक तौर पर श्रीमती मंजु आर्या द्वारा दिनांक अक्टूबर 08, 2014 को मोमबत्ती का काम शुरू किया गया। इस काम मे समय–समय पर केन्द्र की गृह विज्ञान की वैज्ञानिक द्वारा लाभ को अधिक बढ़ाने हेतु मार्गदर्शन दिया गया शुरूवात में श्रीमती मंजु आर्या द्वारा 60 किग्रा. मोम के साथ व्यवसाय शुरू किया गया जिसमें उन्होने मोम, धागा, रंग, ईधन, शाइनर, पालीथिन पर कुल रू. 9,000/– व्यय किये गये। इस स्वरोजगार से रू. 20,035/– आर्जित किये गये जिसमें कुल व्यय निकालने के बाद कुल शुद्ध आय रू. 11,035/– प्राप्त हुई।

प्रशिक्षणार्थियों द्वारा बनाई गई मोमबत्तियां

उक्त परिणाम ने सिद्ध किया कि 60 किग्रा. मोम से सादी मोमबत्तियाँ बनाकर लगभग 11,035/– का लाभ लिया जा सकता है। मोमबत्तियों को यदि विभिन्न आकार में बनाकर ऊपर से पेंन्टिग शाइनर या अन्य माध्यम से सजाया जाए तो लाभ को 20–25 प्रतिशत तक बढ़ाया जा सकता है। चूँकि नैनीताल एक पर्यटक नगरी है तथा यहॉ पर्यटकों का आना जाना लगा रहता है। इस तथ्य के चलते उपरोक्त उत्पाद को विक्रय करना कोई समस्या नहीं है।

तकनीक का प्रभाव : "मोमबत्ती बनाना" (एक कला एवं स्वरोजगार) के अच्छे परिणामों से उत्साहित होकर जिले के अन्य स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा इस व्यवसाय में काफी उत्साह एवं रूचि दिखाई है। जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण है कि अब तक ग्राम सिलौटी, भलुटी, भगत्युडा, बेलवाखान, दोगडा के 20 कृषक महिलाओं द्वारा इसे रोजगार के रूप मे अपनाया गया है।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक

विगत त्रैमास में छः कृषि विज्ञान केन्द्रों, धनौरी (हरिद्वार), ढकरानी (देहरादून), काशीपुर (ऊधमसिंहनगर), ज्योलीकोट (नैनीताल), लोहाघाट (चम्पावत) एवं गैंना एंचोली (पिथौरागढ़) के वैज्ञानिक सलाहकार समिति (SAC) की बैठकें क्रमशः 02.09.2015, 03.09.2015, 09.09.2015, 10.09.2015, 16.09.2015 तथा 17.09.2015 में आयोजित की गयी। धनौरी एवं ढकरानी की बैठकों में पन्तनगर विश्वविद्यालय से डा. वाई.पी.एस. डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा एवं डा. अतर सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अ.प.–अटारी, कानपुर द्वारा प्रतिभाग किया गया। काशीपुर एवं ज्योलीकोट की बैठकों में डा. वाई.पी.एस. डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा; डा. बी.एस. कार्की, सह निदेशक (सस्य विज्ञान) एवं डा. अतर सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अ.प.–अटारी, कानपुर द्वारा तथा लोहाघाट एवं गैंना एंचोली की बैठकों में निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास एवं सह निदेशक (सस्य विज्ञान), डा. बी.एस. कार्की, द्वारा प्रतिभाग किया गया। बैठकों में विगत वर्ष की प्रगति आख्या की समीक्षा के साथ–साथ वर्ष 2015–16 में आयोजित किये जाने वाले विभिन्न प्रसार कार्यक्रमों को अन्तिम रूप दिया गया।

वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक को सम्बोधित करते हुए निदेशक प्रसार शिक्षा

कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रसार कार्यक्रमों/गतिविधियों का अनुश्रवण

विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रसार कार्यक्रमों/गतिविधियों का अनुश्रवण सितम्बर 11–14, 2015 को लोहाघाट (चम्पावत) एवं गैंना एंचोली (पिथौरागढ़) में डा. टी.पी. सिंह, संयुक्त निदेशक प्रसार (कृषि अभियांत्रिकी) एवं डा. सी.पी. सिंह, प्राध्यापक (उद्यान विज्ञान) द्वारा; सितम्बर 14, 2015 को ज्योलीकोट (नैनीताल) में डा. के.एस. शेखर, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान), डा. डी.सी. डिमरी, संयुक्त निदेशक प्रसार (उद्यान विज्ञान) एवं डा. बी.एस. कार्की, सह निदेशक (सस्य विज्ञान) द्वारा; सितम्बर 18–19, 2015 को काशीपुर (ऊधमसिंहनगर) में डा. पी.सी. पाण्डे, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं ई. अनिल कुमार, सह निदेशक (मृ. एवं जल सं. अभि.) द्वारा; सितम्बर 21–23, 2015 को मटेला (अल्मोड़ा) में डा. सी.पी. सिंह, प्राध्यापक (उद्यान विज्ञान) एवं डा. राम जी मौर्य, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) द्वारा तथा सितम्बर 21–25, 2015 को ग्वालदम (चमोली) एवं जाखधार (रूद्रप्रयाग) में डा. पी.सी. पाण्डे, प्राध्यापक (सस्य विज्ञान) एवं डा. डी.सी. डिमरी, संयुक्त निदेशक (उद्यान विज्ञान) द्वारा किया गया। इसके अन्तर्गत रबी सीजन में कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों द्वारा आयोजित अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं प्रक्षेत्र परीक्षणों का अनुश्रवण किया गया तथा इन प्रदर्शनों की प्रभाविता को बढ़ाने हेतु आवश्यक सुझाव दिये गये।

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी–उत्तराखण्ड) द्वारा विगत त्रैमास में राज्य के प्रगतिशील कृषकों, कृषक सलाहकार समिति (एफ.ए.सी.) के सदस्यों, विकास खण्ड स्तरीय तकनीकी दल

(बी.टी.टी.) के सदस्यों, फार्म स्कूल संचालकों, रेखीय विभाग के वरिष्ठ अधिकारी, कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिक एवं ब्लाक तकनीकी प्रबन्धक (बी.टी.एम.) हेतु जैविक खाद्यान्न एवं सब्जी उत्पादन, मुर्गी पालन– एक लाभकारी व्यवसाय, संरक्षित सब्जी उत्पादन तकनीकी द्वारा बेमौसमी सब्जियों का उत्पादन, कृषक से कृषक प्रसार की विधियाँ, दुग्ध उत्पादन एवं दुधारू पशुओं का प्रबन्धन, छोटे एवं सीमान्त कृषकों हेतु फार्मिंग सिस्टम माड्यूल एवं रबी फसलोत्पादन की उन्नत तकनीक आदि विषयों पर 07 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा कुल 116 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए।

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/भ्रमण

प्रसार शिक्षा निदेशालय के प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा विगत त्रैमास में विभिन्न सरकारी विभागों, स्वयं–सेवी संस्थाओं, निजी एवं सार्वजनिक फर्मों तथा परियोजनाओं द्वारा प्रायोजित कुल 14 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। आयोजित किये गये यह प्रशिक्षण कृषि वानिकी, समशीतोषण फलों की बागवानी एवं संरक्षित खेती, कृषि विविधीकरण, पशुपालन, मशरूम उत्पादन तथा ऑपरेशन, मेन्टिनेन्स एवं मैनेजममेन्ट ऑफ एग्रीकल्चरल इक्विपमेंट आदि से सम्बन्धित थे। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों से 492 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। अधिकांश प्रशिक्षण दो दिवसीय से लेकर सात दिवसीय थे। प्रशिक्षणों के अन्त में प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रमाण–पत्र वितरित किये गये। उपरोक्त प्रशिक्षणों के दौरान भ्रमण कार्यक्रम में किसानों को विश्वविद्यालय स्थित सभी अनुसंधान केन्द्रों पर भ्रमण कराकर नवीनतम जानकारी प्रदान की गयी।

एकल खिड़की पद्धति से कृषक सेवा

प्रसार शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत कार्यरत कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक) द्वारा विगत त्रैमास में पन्तनगर कृषक हेल्पलाईन (05944–234810) एवं किसान कॉल सेन्टर (1800–180–1551 टोल फ्री) के माध्यम से कुल 752 प्रश्न किसानों द्वारा पूछे गये, जिनका समाधान सम्बन्धित विषय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया। देश एवं प्रदेश के विभिन्न स्थानों से आये 1138 कृषकों ने एटिक पर भ्रमण किया एवं साहित्य सम्बन्धी जानकारी प्राप्त की। इसके अतिरिक्त किसानों द्वारा एटिक से कुल रू. 72,648 के साहित्य एवं रू. 56,610 के धान्य फसलों एवं सब्जियों के बीजों का क्रय किया गया।

आगामी त्रैमास में कृषकों हेतु महत्वपूर्ण बिन्दु

कृषि हेतु–

राई एवं सरसों की बोआई अक्टूबर के प्रथम पखवाड़े तक अवश्य पूरा कर लें।

असिंचित क्षेत्रों में चना, मटर, मसूर की बोआई अक्टूबर माह के तृतीय सप्ताह तक एवं सिंचित क्षेत्रों में नवम्बर के प्रथम पखवाड़े तक तथा पर्वतीय क्षेत्रों में अक्टूबर से मध्य नवम्बर तक अवश्य कर लें। दिसम्बर माह में असिंचित पर्वतीय क्षेत्रों में सब्जी मटर की अगेती किस्मों की बोआई करें।

मैदानी एवं निचले पर्वतीय असिंचित क्षेत्र में गेहूं की बोआई अक्टूबर के द्वितीय पखवाड़ें में एवं ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों में अक्टूबर के प्रथम सप्ताह तथा सिंचित क्षेत्रों में नवम्बर में करें।

पर्वतीय क्षेत्रों में अक्टूबर के मध्य से नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक मसूर की बोआई करें।

आलू, मूली, गाजर, शलजम, लहसुन की बोआई अक्टूबर माह में करें।

पुष्प गुच्छ रोग की रोकथाम हेतु अक्टूबर माह में आम के बाग में नैप्थलीन एसिटिक एसिड (200 पीपीएम) का छिड़काव करें एवं नवम्बर माह में मीली बग से बचाने के लिए वृक्षों पर पालीथीन की 30 से.मी. चौड़ी पट्टी गोलाई में बांधकर दोनों सिरों पर ग्रीस लगायें तथा प्रति वृक्ष थालों एवं तनों पर क्लोरोपाइरीफॉस 5 प्रतिशत धूल की 200–250 ग्रा. मात्रा का बुरकाव करें।

अक्टूबर माह में नींबू वर्गीय फल, आंवला, करौंदा, कटहल, अमरूद, नाशपाती में रस्ट की रोकथाम हेतु ब्लाइटाक्स 50 (0.25 प्रतिशत) का छिड़काव करें।

आड़ू, आलूबुखारा एवं खुबानी में जड़बेधक कीट की रोकथाम हेतु क्लोरोपाइरीफॉस (4 मि.ली./10 लीटर पानी में) का घोल बनाकर थालों में सिंचाई करें।

पशुपालन एवं अन्य हेतु–

पशुओं के छोटे बच्चों के पेट को कृमि रहित करने हेतु पिपराजीन या अन्य दवा चिकित्सक की परामर्श अनुसार दें।

माह नवम्बर एवं दिसम्बर में पशुओं को ठण्ड से बचाव हेतु पशुशाला पर पर्दे लगायें। अक्टूबर एवं नवम्बर माह में भैंस गरमी में आती है अतः ध्यान दें। गाभिन भैंसों को अधिक खनिज लवण दें।

पशुओं को चर्मरोग से बचाने हेतु सूखे खुराटे का प्रयोग करें।

मुर्गी घरों के बिछावन को दिन में 2–3 बार पलटते रहें ताकि वह सूखता रहे।

मुर्गियों से अधिक अण्डा प्राप्त करने हेतु दिन और रात की कुल रोशनी 16 घण्टे बनाएं रखें। जैसे–जैसे दिन छोटे होते जाएं रात की रोशनी बढ़ाते जाएं।

कुक्कुटों में ठण्ड से बचाव के लिए आहार में एंटीबायोटिक औषधि दें।

मत्स्य तालाब में अक्टूबर/नवम्बर माह में खाद व उर्वरक का प्रयोग करें। मछलियों को पर्याप्त मात्रा में परिपूरक आहार दें। अवांछनीय जलीय जीव जन्तुओं को निकालते रहें।

निदेशक प्रसार शिक्षा का विभिन्न वाह्य आयोजनों/बैठकों में प्रतिभाग

निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा नास्क कॉमप्लैक्स, नई दिल्ली में जुलाई 07, 2015 को आयोजित 'टेक इट टू फारमर्स– द फारमर्स राईट थ्रो एवेयरनेस' विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार में प्रतिभाग किया गया।

निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा जुलाई 31, 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट (चम्पावत), अगस्त 01, 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, गैंना एंचोली (पिथौरागढ़), अगस्त 04, 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा), अगस्त 05, 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालदम (चमोली), अगस्त 10, 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार) तथा अगस्त 11, 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून) का भ्रमण कर केन्द्र द्वारा क्रियान्वित किये जा रहे कार्यक्रमों का अनुश्रवण किया गया। साथ ही केन्द्र के विकास हेतु वैज्ञानिकों को उचित दिशानिर्देश दिये गये। इस भ्रमण में संयुक्त निदेशक प्रसार (उद्यान), डा. डी.सी. डिमरी भी साथ थे।

निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा अगस्त 14, 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर) का भ्रमण कर क्रियान्वित किये जा रहे कार्यों का अनुश्रवण किया गया। इस भ्रमण कार्यक्रम में प्राध्यापक प्रसार, डा. एस.के. बंसल भी साथ थे।

निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा सितम्बर 07, 2015 को भा.कृ.अ.प.– कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, जोन–4, कानपुर में आई.सी.ए.आर. की पंचवर्षीय योजना के क्रियान्वयन, कृषि विज्ञान केन्द्रों के गतिविधियों की समीक्षा एवं सूचना एवं संचार तकनीकी का उपयोग करते हुए कृषि विज्ञान केन्द्रों के अनुश्रवण विषयों पर विचार–विमर्श हेतु आयोजित बैठक में प्रतिभाग किया गया।

निदेशक की कलम से

कृषि के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी में विभिन्न पहलुओं का बहुत तेजी से प्रयोग बढ़ रहा है। गांवों में कृषि से सम्बन्धित नवीनतम जानकारी के लिए ई–चौपाल केन्द्रों की तेजी से स्थापना हो रही है। इसके अतिरिक्त ई–चौपाल केन्द्र ग्रामीण विकास में भी अपनी भूमिका निभा रहे हैं। ये ई–चौपाल पशुधन सम्बन्धी जानकारी, नस्ल सुधार, दुग्ध उत्पादन बढ़ाने, जल संरक्षण, स्वयं सहायता समूहों के विकास के लिए भी कार्य रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी आज हर उद्यम का अभिन्न अंग बन चुकी है। ई–कामर्स व्यापार और वाणिज्य की आन–लाईन लेन–देन की कुशल प्रक्रिया है। आज के दौर में किसान कॉल सेन्टर बदलते ग्रामीण भारत की नई तस्वीर कर रहे हैं। किसान कॉल सेन्टर का मुख्य उद्देश्य टेलीफोन कॉल पर किसानों के प्रश्नों का जवाब देना है। ये कॉल सेन्टर राज्य व केन्द्र शासित प्रदेशों के 14 विभिन्न स्थानों में कार्यरत हैं। कॉल सेन्टर सेवाएं सप्ताह के सातो दिन सुबह 6.00 बजे से शाम को 10.00 बजे तक उपलब्ध हैं। देशव्यापी 11 अंकों वाला टोल फ्री नम्बर 1800–180–1551 पर देश के किसी भी कोने से किसान फोन कर कृषि, बागवानी, पशुपालन, मत्स्य पालन, कुक्कुट, मधुमक्खी पालन, रेशम उत्पादन, कृषि अभियांत्रिकी, कृषि विपणन, जैव प्रौद्योगिकी, गृह विज्ञान से सम्बन्धित अपनी समस्या का समाधान प्राप्त कर सकते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी में नैनो तकनीक का भी अभिन्न प्रयोग कृषि, पशुपालन एवं खाद्य प्रसंस्करण में हो रहा है।

भारत में 12 करोड़ से भी अधिक कृषक परिवारों हेतु सूचना एवं तकनीकी आवश्यकताओं के लिए प्रसार तंत्र एक चुनौती बनी हुई है। मई 2014 के ट्राई के आंकड़ों के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में 38 करोड़ से भी अधिक मोबाइल कनेक्शन हैं। जुलाई 16, 2013 को भारत के मा. राष्ट्रपति द्वारा mkisan वेबसाइट द्वारा एस.एम.एस. पोर्टल लांच किया गया है। mkisan पोर्टल किसानों के लिए उनकी भाषा में कृषि पद्धतियों और स्थान की पसन्द के अनुसार जानकारी/सेवाएं और परामर्श देने के लिए केन्द्रीय और सभी राज्य सरकारों व कृषि के क्षेत्र में संगठनों और सम्बन्धित क्षेत्रों को सक्षम बनाता है। भारत सरकार द्वारा कृषि विस्तार (प्रयोगशाला से खेत तक अनुसंधान विस्तार) के भाग के रूप में राष्ट्रीय ई शासन–कृषि योजना के अन्तर्गत सेवाओं को किसानों तक पहुंचाने के विभिन्न तरीकों की परिकल्पना की गई है। इनमें पिको प्रोजेक्टर और छोटे उपकरणों से सुसज्जित विस्तार कर्मियों की पहुंच के साथ मिलकर विभागीय कार्यालयों में स्क्रीन कियोस्क, एग्री क्लीनिक, निजी खोखे, मास मीडिया, सामान्य सेवा केन्द्र, किसान कॉल सेन्टर और इन्टरनेट शामिल हैं। हालांकि मोबाइल कृषि विस्तार का सबसे शक्तिशाली और सर्वव्यापी साधन है। मोबाइल पर सूचना प्राप्त करने के लिए किसान अपना पंजीकरण 3 तरह से किसान कॉल सेन्टर पर फोन कर, वेब पंजीकरण अथवा एस.एम.एस. के माध्यम से करा सकते हैं। किसान कॉल सेन्टर के टोल फ्री नम्बर 1800–180–1551 पर कॉल कर मोबाइल का पंजीकरण करा सकता है। इसमें किसान अधिक से अधिक आठ फसलों या गतिविधियों के विकल्प चुन सकता है ताकि उसे अनावश्यक संदेश प्राप्त नहीं हों, जिनमें उनकी रूचि नहीं है। किसान इस एस.एम.एस. सुविधा के लिए किसान कॉल सेन्टर के टोल फ्री नम्बर 1800–180–1551 पर कॉल करके या वेब पोर्टल http://mkisan.gov.in/hindi/ wbreg.aspx, www.farmer.gov.in पर जाकर या एस.एम.एस. सुविधा द्वारा 51969 या 7738299899 नम्बर पर एस.एम.एस. भेज कर पंजीकृत हो सकते हैं। पंजीकरण हेतु प्रथम बार एस.एम.एस. के लिए शुल्क लिया जाता है जबकि विशेषज्ञों और अधिकारियों से बाद में प्राप्त होने वाले एस.एम.एस. के लिए कोई शुल्क नहीं पड़ता है। एस.एम.एस. भेजने हेतु संदेश बाक्स में टाइप के लिए प्रारूप है– ''किसान GOV REG (नाम), (राज्य का नाम), (जिला का नाम), (ब्लॉक का नाम)'' (नोट– राज्य, जिला और ब्लॉक के नाम के केवल पहले 3 वर्णों की आवश्यकता होती है)। कृषकों को एस.एम.एस. उनकी पसन्द के अनुसार हिन्दी, अंग्रेजी या क्षेत्रीय भाषा में रोमन स्क्रिप्ट में प्राप्त करने की सुविधा है, यह सुविधा टैक्स्ट एस.एम.एस. एवं वॉइस एस.एम.एस. दोनों तरह की है। इसमें भी कृषि एवं कृषिगत गतिविधियों से सम्बन्धित 08 विकल्प चुनने की सुविधा है। कृषि एवं सहकारिता विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, पशुपालन, दुग्ध एवं मत्स्य विभाग, भारतीय मौसम विज्ञान विभाग और खाद्यान्न अधिप्राप्ति अभिकरण साथ मिलकर किसानों को एस.एम.एस. प्रसारण हेतु कार्य कर रहे हैं। इस सुविधा का लाभ उठाकर कृषक अत्यन्त लाभान्वित हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त www.farmer.gov.in पोर्टल पर विभिन्न कृषि आगतों जैसे– बीज, कीटनाशी, कृषि यंत्र, उर्वरक इत्यादि एवं कृषि बीमा, भण्डारण, कृषि साख, प्रसार गतिविधियों एवं अन्य जानकारियां एवं योजनाओं के बारे में सूचना प्राप्त की जा सकती है। इसके अतिरिक्त पन्तनगर विश्वविद्यालय में स्थापित कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र के दूरभाष सं. 05944–234810 पर भी किसान, कृषि से सम्बन्धित अपनी समस्या का समाधान प्राप्त कर सकते हैं।

निष्कर्षतः उत्तराखण्ड में दूरदराज के क्षेत्रों में जहाँ भौतिक सम्पर्क बनाना कठिन है ऐसे क्षेत्रों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी कारगर भूमिका निभा सकती है। बशर्ते आवश्यकता है सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की सुविधा को अधिकाधिक लोगों तक पहुंचाने की, जिससे शहरों के साथ–साथ गांव के लोग भी पलक झपकते ही सूचनाएं एवं जानकारियाँ प्राप्त कर सके।

(वाई0पी0एस0 डबास)

सम्पर्क सूत्र :– डा0 वाई0पी0एस0 डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा, गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पन्तनगर–263 145, ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड), ☎ 05944–233336 (कार्यालय), 233664 (निवास), Email-dee_gbpuat@rediffmail.com

विश्वविद्यालय हेल्प लाइन दूरभाष सं0 05944–234810, किसान कॉल सेन्टर निःशुल्क दूरभाष सं0 1800–180–1551

दृश्य यात्रा

कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं भ्रमण कार्यक्रमों की झलकियाँ

मुद्रक : विश्वविद्यालय मुद्रणालय, पन्तनगर